19.9.67 ओमशांति रात्रीक्लास

(बच्चों) को शौक होना चाहिए क्योंकि हर एक अपने लिए बादशाही स्थापन करते हैं। यह तो निश्चय है कि शिवबाबा बाप भी है तो टीचर भी है, गुरू भी है। यह तो निश्चय है ना। समझते हुए भी कब2 भूल हो जाती है। तुम जानते हो कि यह बापदादा है। यह जानते भी कि मैं विश्व का मालिक बनने वाला हूं। फिर भी तूफान बहुत आते हैं। कितनी खयालातें रहती हैं। तुम भी समझते हो कि जब बाप से हम वर्सा लेने वाले हैं ना चाहते हुए भी विकर्म और अकर्तव्य कार्य हो ही जाता है। अच्छे2 जो बाबा को बहुत प्यार करते हैं वो भी लिखते हैं कि बाबा मैं याद में आधा घंटा भी नहीं रह सकता हूं। ल.ना. ,सीढ़ी के चित्र छप रहे हैं। एक2 चित्र भी दस हजार छपवा रहे हैं। यह मुख्य चित्र है। गीता के भगवान वाला भी चित्र मुख्य है। बाबा ने लिखा है कि टिन की शीट्स पर बनवाओ। बड़े2 स्टेशनों पर लगाओ। बोलो हम कोई कमाई के लिए नहीं लगाते हैं। यह तो भारत के ही कल्याण अर्थ हम अपने ही तन–मन–धन से कर रहे हैं ;परंतु फिर विघ्न भी तो बहुत ही पड़ते हैं ना। बाबा ने देहली वालों को लिखा है कि देहली में 3/4म्यूजियम हो सकते हैं। देहली तो बहुत बड़ी है ना। बहुत सेंटर्स होंगे। बहुत आकर समझेंगे। खर्चा तो बहुत होता है। ऐसा तो कोई भी साहुकार नहीं है जो कि फट से इतना खर्चा कर लेवे। आने वाले तो हैं ;परंतु टू लेट। याद की यात्रा में बाप कहते हैं कि बहुत मेहनत है। देहअभिमान होने कारण भूलें बहुत होती हैं। पावन बनने की .....प्रतिज्ञा करके भी अगर फिर भूलें करते हैं तो पतित बन जाते हैं। लिखते हैं कि हम सेंटर पर नहीं जावेंगे। मैं लिख देता हूं कि सैंटर पर जाने की मना नहीं है। ऐसे केस बहुत होते रहते हैं। सबसे जास्ती चोट इसमें ही लगती है। इसमें बहुत खबरदारी रखनी चाहिए। बहुत घाटा पड़ता है। तुम बच्चे जानते भी हो कि बरोबर हमारा बाबा बाप भी है तो टीचर और सतगुरू भी है। हम आते ही हैं बेहद के बाप से वर्सा लेने। आते रहेगी ,वृद्धि होती रहेगी। ब्राह्मणों का झाड़ ही फिर देवताओं का बनेगा। बाकी तो है बाइप्लाट्स। आलराउंड पार्ट इन देवताओं का ही चलता हैं 84जन्म भी तो सभी नहीं लेते हैं। यह भी समझते हो कि यह नालेज कोई और दे नहीं सकते हैं। बाप समझाते हैं कि भक्ति तो है उतरती कला। ज्ञान से होती है चढ़ती कला। अभी हैं धर्म–कर्म से भी भ्रष्ट। देवतायें तो हैं श्रेष्ठ। धर्मभ्रष्ट वाले ही इनके आगे जाकर महिमा गाते हैं कि तुम ऐसे हो, हम ऐसे हैं। बाप ही कहते हैं कि तुम ही गिरे हो ,पुजारी बने हो। फिर तुम्हीं पूज्य बनेंगे। पूज्य बनाने वाला एक ही बाप है। सब मुक्ति और जीवनमुक्ति में चले जावेंगे। फिर है जीवनबंध। बाप ने समझाया है कर्म अकर्म विकर्म का राज। कर्म अकर्म होता है जबकि तुम सतयुग में होते हो। फिर रावणराज्य में तुम्हारे कर्म विकर्म बन जाते हैं। बच्चे भी समझते हैं कि बाबा की बात तो बरोबर ठीक है। यह सभी बातें तुम बेहद के बाप द्वारा ही सुन रहे हो। तो अब बाप की श्रीमत पर चलना है ;परंतु माया चलने नहीं देती है। अपना चार्ट रोज देखना है। अपना ही कान पकड़ना चाहिए। आत्मा अपने शरीर को चमाट मारती है। यह भूल नहीं करनी चाहिए। दुःख तो भासता है ना। आत्मा ही दुःखी–सुखी होती है। बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिए। सपने में भी खयाल में नहीं होगा कि बाप आकर पढ़ाते हैं। अब तुम फालोअर्स हो शिवबाबा के। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा जो समझाते हैं तो उनको फालो करना चाहिए ना। करते हो मगर नम्बरवार पुरुषार्थअनुसार श्रीमत पर चलते हो। जितना हो सके रात को बच्चियों के तो खास सम्भाल कर बाहर जाना चाहिए। बाबा को बच्चियों का खयाल .....है। सवेरे जाती हैं तो मनुष्य समझते हैं कि मंदिर आदि में जाती होगी। कब दुःख नहीं देंगे। .....तुमको कब भी जेवर पहनकर नहीं जाना है। यहां पर भी पहनकर नहीं आना है। घर.....भी नुकसान हो जाता है। फिर भी रखना ही पड़ता है किसी समय के लिए। ....माया बहुत गिरावेंगे ;परंतु खबरदार रहकर बचते रहना है। ओम।